WWJMRD 2017; 3(11): 289-291
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
UGCApproved Journal
Impact Factor MJIF: 4.25
e-ISSN: 2454-6615

कुलदीप वर्मा
शोध छात्र, रक्षा एवं स्ट्रेतेजिक अध्ययन विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद, भारत

Correspondence:
कुलदीप वर्मा
शोध छात्र, रक्षा एवं स्ट्रेतेजिक अध्ययन विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद, भारत

हिन्द महासागर क्षेत्र में ड्रग्स और छोटे हथियारों की तस्करी

कुलदीप वर्मा

संक्षेपिका
हिन्द महासागर क्षेत्र में ड्रग तस्करों के लिये हेरोइन तस्करी के लिये मुख्य उत्पाद है। यह हेरोइन अफीम के पौधे से प्राप्त की जाती है। अफीम की खेती दो मुख्य क्षेत्रों में की जाती है। जिन्हें गोल्डन त्रिभुज तथा गोल्डन क्रीसेंट नाम दिया गया है। गोल्डन त्रिकोण दक्षिण पूर्व एशिया के त्रिकोणीय क्षेत्र को संदर्भित करता है जो म्यांमार, थाईलैण्ड और लाओस को ओवरलैप करता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करता है जैसे अफीम की अच्छी गुणवत्ता, उत्पादकता, दूरदराज के ऊपरी इलाके पर्वतीय अल्पसंख्यक आबादी, चरम जातीय विवधता और विद्रोह का लम्बा इतिहास। गोल्डन क्रेसेंट के क्षेत्र में अफगानिस्तान, पाकिस्तान और ईरान शामिल है। यह दुनिया के अग्रणी हेरोइन उत्पादक के क्षेत्र में उभरा है। भारत विश्व में तीन सबसे बड़े हेरोइन और अफीम उत्पादक देशों अफगानिस्तान, पाकिस्तान एवं म्यांमार से घिरा हुआ है। जिसके परिणामस्वरूप ड्रग व्यापार और सशस्त्र सेनाओं के बीच संघर्ष होता ही रहता है।

मुख्य शब्द– ड्रग तस्करी, अफगानिस्तान, अफीम, हिन्द महासागर, छोटे हथियारा, सुरक्षा।

परिचय
बीसंवी सदी के अंत में सुरक्षा की अवधारणा में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलता है। शीत युद्व की समाप्ति के बाद प्रमुख संघर्षों का अंत हुआ और क्षेत्रीय सहयोग और सापेक्ष शान्ति का मार्ग प्रशस्त किया। हलांकि अन्तर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सम्बन्धों में इन परिवर्तनों के बावजूद सुरक्षा खतरों को पूरी तरह समाप्त नहीं किया बल्कि उनके स्वरूप में व्यापक बदलाव देखने को मिलता है। गैर परम्परागत खतरों जैसे पर्यावरण ह्रास, सामूहिक आबादी आन्दोलन, छोटे हथियार प्रसार और नशीली दवाओं की तस्करी में व्यापक वृद्धि हई है। शीत युद्ध के अंत के बाद राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों में प्रसार हुआ और एशिया प्रशान्त और हिन्द महासागर क्षेत्र के देश धीरे–धीरे इन खतरों को पहचानना शुरू किया और महसूस किया कि ये खतरे हमारी सुरक्षा व्यवस्था के लिये बड़ा खतरा है और ये खतरे लम्बे समय तक गैर सैन्य खतरों के रूप में प्रभावित कर सकते है। जो देश की सीमाओं से गुजरते हुये देश की राजनैतिक और सामाजिक अखंडता को क्षति पहुँचा सकते है। मोटे तौर पर इन खतरों को निम्न तीव्रता संघर्ष के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जो परम्परागत और परमाणु खतरों के विपरीत राज्य प्रायोजित समूहों द्वारा नियोजित साधन है जो गैर राज्य प्रायोजित समूहों का प्रयोग अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये करते है।
छोटे हथियारों और हल्के हथियारों के अवैध व्यापार अपने आप में कोई नई घटना नहीं है लेकिन शीत युद्ध के अंत के साथ इसको एक नया आयाम प्राप्त हुआ। नशीले पदार्थों की तस्करी और आतंकवादी समूहों के बीच सहजीवी सम्बन्धों को अच्छी तरह से जाना जा सकता है। दोनों के बीच जो गठजोड़ विकसित हुआ है उसे नार्को आतंकवाद नाम दिया गया। नार्को आतंकवाद का सर्वप्रथम प्रयोग 1983 में पेरू के राष्ट्रपति बेलांड टेरी ने किया था। जब अपने देश में आतंकववादी प्रकार के हमलों और नशीली दवाओं के तस्करों के विरूद्ध पुलिस ने अभियान चलाया था। क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर नशीले पदार्थ और छोटे हथियार मिलकर राज्य के लोकतांत्रिक संस्थानों को असरदार तरीके से कमजोर कर सकते है।

दक्षिण एशिया क्षेत्र
दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र छोटे हथियारों और ड्रग व्यापार का केन्द्र बिन्दु रहा है। इसके केन्द्र बिन्दु होने के विभिन्न कारण है। अफगानिस्तान–पाकिस्तान क्षेत्र दुनिया के सबसे बड़े अवैध हथियारों के बाजार के रूप में स्थापित है।

यह स्थित इसलिये उत्पन्न हुई क्योंकि यह क्षेत्र आतंकवादी और उग्रवादी विचारधारा का केन्द्र है। इसके अतिरिक्त एशिया में दुनिया के सबसे बड़े अफीम उत्पादक देशों में दो म्यांमार और अफगानिस्तान इसी क्षेत्र में है। ये अच्छी तरह से ज्ञात है कि नशीले पदार्थों की तस्करी, छोटे हथियारों की उपलब्धता पर व्यापक रूप से निर्भर करती है।

दक्षिण एशिया में पाकिस्तान द्वारा धार्मिक रूढ़िवाद को क्षेत्रीय नीति के साधन के रूप में प्रयोग और अफगानिस्तान में तालिबान के द्वारा फैलाया गया धार्मिक रूढ़िवाद दक्षिण एशिया की सुरक्षा पर गहरा असर डाला है।

अफगानिस्तान बलूचिस्तान और उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रान्त पाकिस्तान के हथियार और हथियार उत्पादन तथा नशीले पदार्थों के व्यापार के क्षेत्र है। इन क्षेत्रों में दोनों के बीच सहजीवी सम्बन्ध पाया जाता है। नशीले पदार्थों की तस्करी के द्वारा ही कश्मीर, तजाकिस्तान चेचन्या, बोस्निया और अन्य जगहों पर कट्टरपंथी अभियान स्थापित हुये है। भारत की सीमाओं से बढ़ती नशीले पदार्थों की तस्करी नये प्रकार की सामाजिक और राजनैतिक समस्याओं का आयोजन कर रही है। अन्तर्राष्ट्रीय आंतकवाद, नशीली दवाओं की तस्करी और छोटे हथियारों की अवैध तस्करी ने विश्व की सुरक्षा और स्थिरता पर गम्भीर चुनौती पेश की है। राष्ट्रीय सीमायें इन खतरों को सीमित नहीं करती और कोई भी देश व्यक्तिगत रूप से इन चुनौतियों का सामना नहीं कर सकता इनसे क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ही लड़ा जा सकता है।

भारत विश्व में तीन सबसे बड़े हेरोइन और अफीम उत्पादक देशों अफगानिस्तान, पाकिस्तान एवं म्यांमार से घिरा हुआ है। जिसके परिणामस्वरूप ड्रग व्यापार और सशस्त्र सेनाओं के बीच संघर्ष होता ही रहता है। श्रीलंका छोटे हथियारों के गंभीर प्रसार से ग्रस्त रहा है। श्रीलंका सेना के खिलाफ अपनी सशस्त्र ताकत बढ़ाने के लिये श्रीलंका के उग्रवादियों ने नशीले पदार्थों के व्यापार में गहराई से प्रवेश किया था। लिट्टे के खत्म होने के बाद यह कुछ समय के लिये समाप्त हो गया था किन्तु हाल ही में इनके फिर से सक्रिय होने की खबरें आनी शुरू हो गई है।

नशीले पदार्थों के उत्पादन और छोटे हथियारों के प्रसार के लिये कुख्यात दो क्षेत्र गोल्डन क्रीसेंट और गोल्डन त्रिभुज की भौगोलिक स्थित इनके व्यापार एवं प्रसार के लिये बहुत ही अनुकूल है।

हिन्द महासागर क्षेत्र में अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के जलमार्ग इनके लिये आदर्श स्थित प्रदान करते है। गोल्डन क्रीसेंट और गोल्डन त्रिभुज क्षेत्र में विद्रोही समूहों, हथियारों के व्यापारियों और नारकों आतंकवादियों के बीच एक आदर्श सहजीवी सम्बन्ध होता है। यह सम्बन्ध इस क्षेत्र में कार्यरत समूहों के बीच काफी सामान्य है। यद्यपि सभी विद्रोही समूह नशीली दवाओं के उत्पादन एवं तस्करी में संलग्न नहीं है फिर भी ड्रग तस्करी के संचालन के लिये ये विद्रोही समूह सुरक्षा प्रदान करते है और बदले में उनसे सुरक्षा राशि प्राप्त करते है।

अफ्रीका में स्थित

अफ्रीका में भी यही स्थित बरकरार है। शीत युद्ध का अन्त अफ्रीका में शान्ति स्थापित नहीं कर पाया। द्विध्रुवीय विश्व व्यवस्था का अन्त कुछ राष्ट्रों के पतन का कारण भी बना। इसके साथ अफ्रीका में उत्पन्न हुये शून्य में गैर राज्य समूहों ने कदम रखा। इसके साथ ही इन गैर राज्य समूहों का साथ स्वतंत्र ऐजंटों ने और कुछ विश्व की शक्तियों ने दिया। जिससे इस क्षेत्र में संघर्ष में वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप शीत युद्ध के दौरान लाखों अधिशेष हथियारों को अन्तर्राष्ट्रीय हथियार बाजार में डाल दिया गया जिसमें अफ्रीका इन हथियारों के बाजार के रूप में उभर कर सामने आया और ये हथियार अफ्रीका के लाखों अप्रशिक्षत लड़ाकों के हाथ में आये जिससे अफ्रीका के छोटे–छोटे देशों में संघर्ष में अभूतपूर्व वृद्धि हुई और लाखों लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी।

अफ्रीकी क्षेत्र में स्थित सबसे अस्थितर है। इस क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वतंत्र विद्रोह की श्रंखला के द्वारा हिंसक संघर्ष हो रहे है। इस क्षेत्र में स्थानीय संघर्षों के संभावित खतरों के मामले में अनिश्चितता, जो बड़े पैमाने पर सामाजिक आर्थिक असमानताओं और शरणार्थियों के सामूहिक आन्दोलन के कारण शान्ति और मानव विकास को प्राप्त करने के लिये एक बड़ी बाधा है।

ड्रग नेटवर्क

हिन्द महासागर क्षेत्र में ड्रग तस्करों के लिये हेरोइन तस्करी के लिये मुख्य उत्पाद है। यह हेरोइन अफीम के पौधे से प्राप्त की जाती है। अफीम की खेती दो मुख्य क्षेत्रों में की जाती है। जिन्हें गोल्डन त्रिभुज तथा गोल्डन क्रीसेंट नाम दिया गया है। गोल्डन त्रिकोण दक्षिण पूर्व एशिया के त्रिकोणीय क्षेत्र को संदर्भित करता है जो म्यांमार, थाईलैण्ड और लाओस को ओवरलैप करता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करता है जैसे अफीम की अच्छी गुणवत्ता, उत्पादकता, दूरदराज के ऊपरी इलाके पर्वतीय अल्पसंख्यक आबादी, चरम जातीय विवधता और विद्रोह का लम्बा इतिहास। गोल्डन क्रेसेंट के क्षेत्र में अफगानिस्तान, पाकिस्तान और ईरान शामिल है। यह दुनिया के अग्रणी हेरोइन उत्पादक के क्षेत्र में उभरा है।

1990 की शुरूवात में हेरोइन एक प्रमुख मादक पदार्थ के रूप में विश्व ड्रग के रूप में उभरा है। यूरोप में लगभग 80 प्रतिशत ड्रग और संयुक्त राज्य अमेरिका में 20 प्रतिशत हेराइन इस क्षेत्र से आता है। अफगान युद्ध के समय स्थानीय हेरोइन उत्पादन का विस्तार हुआ। अफगानिस्तान के साथ अपने जातीय सम्बन्धों के माध्यम से उज्बेकिस्तान और तजाकिस्तान जैसे मध्य एशियाई देशों के द्वारा अफीम की खेती की बढ़ती संभावनाओं के कारण हेरोइन उत्पादन को बढ़ावा मिला। नशीली दवाओं की तस्करी हिन्द महासागर क्षेत्र में अवैध व्यापार प्रवाह की सबसे महत्वपूर्ण श्रेणी है।

सन् 2000 ई0 में अफगानिस्तान, पाकिस्तान और ईनान के गोल्डन क्रीसेंट ने म्यांमार, थाईलैण्ड और लाओस के गोल्डन त्रिभुज के गैर कानूनी ड्रग व्यापार जो पूर्वी यूरोप और सिल्क रूट में होता था, को पीछे छोड़ दिया। अफगानिस्तान अफीम का सबसे बड़ा उत्पादक देश है जिसकी अनुमानित 201000 हेक्टेयर भूमि पर अफीम का खेती की जाती है। जिससे 4800 टन अफीम का उत्पादन होता है जो विश्व की कुल अवैध अफीम उत्पादन का 90 प्रतिशत है। हाल ही में आई न्छव्क्ू की वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि इस अफीम की अनुमानित कीमत अफगानिस्तान के कुल सकल घरेलू उत्पाद का 16 प्रतिशत है। इस रिपोर्ट के अनुसार अफीम की खेती के द्वारा 235100 लोगों को पूर्ण रोजगार मिला हुआ है और यहाँ के किसानों के लिये आय का प्रमुख स्रोत अफीम की खेती ही है। नाटो के कमांडर जनरल जान निकोलस के अनुसार तालिबान के आतंकवादियों और ड्रग तस्करों के बीच पाये जाने वाले सहजीवी सम्बन्धों के चलते तस्कर इन्हें पैसा, छोटे हथियार और अन्य सामान देते है और बदले में अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी तालिबान को दी जाती है। इनके अनुसार तालिबान की 60 प्रतिशत आर्थिक मदद अफीम के व्यापार से ही प्राप्त होती है। हलांकि अफीक की खेती पर 1957 में अधिकारिक तौर पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था किन्तु कमजोर प्रशासन, उत्पाादन क्षेत्रों की अनुपलब्धता और आदिवासी सेनाओं के वर्चस्व के कारण ये प्रतिबन्ध अप्रभावी साबित हुये। वास्तव में अफगानिस्तान के पूर्ववर्ती तालिबान शासन ने अफीम उत्पादन को छिपकर प्रोत्साहित किया और अफीम तस्करों से 20 प्रतिशत कर एकत्र किया। अफगानिस्तान

के उत्तरी प्रान्त नंगेर और दक्षिणी प्रान्त हेलमंड घाटी में 80 प्रतिशत से अधिक अफीम उगाया जाता है। अफगान ईरान सीमा के दोनों किनारों पर बलूची कबीलों के बीच जातीय सम्बन्ध एक ट्रान्स नेशनल लिंक प्रदान करते है जो तस्करों को सुरक्षा प्रदान करते है। अरबों डालर के वार्षिक मुनाफे वाला यह अवैध व्यापार ईरान, तुर्की के रास्ते होता है जिसे बाल्कन कारीडोर के नाम से जाना जाता है। हलांकि हेरोइन उत्पादन पर ईरान द्वारा लगाये गये प्रतिबन्धों के बाद दक्षिण पश्चिम एशिया से पश्चिम तक सबसे पंसदीदा ट्रैफिकिंग मार्ग रूस और बाल्टिक राज्यों की तरफ फेगन घाटी के माध्यम से हे।

यह ध्यान देना जरूरी है कि पाकिस्तान के आई एस आई ने अफगानिस्तान, पंजाब और कश्मीर सहित भारत के विभिन्न मोर्चों पर युद्ध के भारी खर्चों को पूरा करने के लिये भारी मात्रा में धन के लेनदेन के साधन के रूप में ड्रग तस्करी को अपनाया है।

हेरोइन के अलावा रासायनिक ड्रग्स का प्रचनल भी बढ़ रहा है। इन रसायनों को पाकिस्तान और अफगानिस्तान की रिफाइनरियों में संश्लेषित किया जाता है फिर इन्हें तुर्की और ईरान के रास्ते अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भेजा जाता है। अफगानिस्तान में नशीली दवाओं के तस्कर कई गुटों में विभक्त है। इन ड्रग तस्करी संगठनों ने खाड़ी देशों के साथ भी मजबूत सम्बन्ध स्थापित किये है। दुबई नशीली दवाओं के मनी लॉड्रिंग के लिये एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में उभर रहा है। नशीली दवाओं का व्यापार बलूचिस्तान के माध्यम से अफगानिस्तान और पाकिस्तान के मकरन तट फिर वहाँ से खाड़ी देशों और यूरोप में जहाजों के द्वारा होता है।

भारत जो तस्करी और अवैध उत्पाद के लिये एक पारगमन बिन्दु के रूप में कार्य करता है। वह भी एक बड़े उत्पादक और नशीली दवाओं के उपभोक्ता के रूप में उभर रहा है। मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों में भारी मात्रा में इनका उत्पादन होता है। नई दिल्ली, इन कई राज्यों से लाई गई हेरोइन के लिये एक प्रमुख उपभोक्ता एवं नेटवर्किंग का केन्द्र रहा है। जहाँ से इसे दूसरे देशों को ले जाया जाता है।

निष्कर्ष

यह स्पष्ट है कि हिन्द महासागर क्षेत्र ड्रग तस्करी और अवैध हथियारों के व्यापार के लिये एक खतरनाक और अस्थिर स्थित में है। हिन्द महासागरीय देशों को इस स्थित को संभालने और नियंत्रित करने के लिये अभी तक कोई संयुक्त कमान और कन्ट्रोल व्यवस्था स्थापित नहीं की है। हलांकि कुछ क्षेत्रीय सहयोग संगठनों जैसे सार्क, आसियान, बिम्स्टेक ने कुछ प्रभावकारी कदम उठाये है किन्तु वे अभी भी अप्रर्याप्त साबित हुये है। ये भी महत्वपूर्ण है कि ये सभी देश मुख्य रूप से मलक्का के जल डमरूमध्य के प्रमुख सामरिक सागर लेन ;ैस्व्द्ध पर निर्भर है। जो मलय प्रायद्वीप और सिंगापुर के बीच पूर्वी और पश्चिमी इंडोनेशिया तक स्थित है। जिस पर एक सुसंगठित निगरानी प्रणाली द्वारा नजर रखने से तस्कारी पर काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। अभी तक इस क्षेत्र के अधिकांश राष्ट्रों ने सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये परम्परागत माध्यमों पर भरोसा रखा है जैसे कि राष्ट्रीय शक्ति का विस्तार, गठबंधन के माध्यम से अपनी ताकत को बढ़ाना जो केवल शक्ति संतुलन का एशियाई संस्करण है, तथा इस तरह के खतरों से निपटने में अक्षम है।

वर्तमान में 1977 में स्थापित न्दपजमक छंजपवदे वपिबम वद कतनहे ंदक बतपउम ;न्छव्क्ब द्ध तथा 1907 में स्थापित जैम न्दपजमक छंजपवदे निदक वित कतनहे ंइनेम बवदजतवस अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायें है जो पूरी तरह से ड्रग्स, नशीले पदार्थों की तस्कारी और अवैध दवाओं के उपयोग से निटपने के लिये सरकारों की मदद करती हैं दक्षिण अफ्रीका और मोजबिम्बक में जो इन समस्याओं से गम्भीर रूप से प्रभावित है वहाँ पर नागरिक समाज और इनके समर्थन से हिंसा की संस्कृति को आक्रमक रूप से चुनौती पेश की है और वहाँ पर नशीले पदार्थों की तस्करी और उपभोग से निपटने में इन संस्थाओं ने सराहनीय कार्य किया है।

इस प्रकार छोटे हथियारों और नशीली दवाओं की तस्करी के प्रसार से निटपने के लिये वैश्विक, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर प्रयास की जरूरत है। इन समस्याओं से निपटने के लिये एक कठोर पुर्नविचार एवं राजनीतिक इच्छा शक्ति के साथ एक रणनीतिक संयुक्त कमांड एवं कन्ट्रोल की आवश्यकता है जो इस खतरनाक संकट से निकालने में सक्षम हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Kar, S.P., Narcotics: Crime, Terrorism & Control 2009 Knowledge world New-Delhi
2. Singh, Deepali Gaur, Drugs Production And Trafficking in Afghanistan 2007, Pentagon Press, New-Delhi.
3. Christine Jojarth Crime, War, and Global Trafficking-Designing International cooperation Cambridge University Press, 2009, New York USA
4. Frank Shanty the Nexus-International Terrorism and Drug Trafficking From Afghanistan Pentagon Press, 2012, New Delhi
5. Anand, Vinod, Export of Holy Terror to Chechnya from Pakistan and Afghanistan, Strategic Analysis Vol.XXIV, No3,June 2000
6. https://www.unodc.org United Nation Office on Drugs And Crime World drug Report 2014
7. https://www.unodc.org United Nation Office on Drugs And Crime World drug Report 2015
8. https://www.unodc.org United Nation Office on Drugs And Crime World drug Report 2016
9. https://www.incb.org Report of the International Narcotics Control Board for 2014
10. https://www.incb.org Report of the International Narcotics Control Board for 2015
11. http://narcoticsindia.nic.in Narcotics Control Bureau, Ministry of Home Affairs, Government of India 2014
12. http://narcoticsindia.nic.in Narcotics Control Bureau, Ministry of Home Affairs, Government of India 2015